www.faithbook.in

Faithbook®
ACTIVITIES BEYOND BOOK

11th JULY 2021
Issue 15

BOOK 027

I know that I know nothing

॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥
॥ पूज्याचार्य श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जयसुंदरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः॥

प्रेरणा : पूज्य मुनिराज श्री युगंधर विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री शंत्रुजय विजयजी म.सा. के शिष्य
पूज्य मुनि श्री धनंजय विजयजी म.सा.

संपादक : नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

Team Faithbook
शुभ शाह, विकास शाह, केविन मेहता, विराज गांधी, नमन शाह

प्रकाशक : शौर्य शांति ट्रस्ट
C/O विपुलभाई झवेरी
VEER JEWELLERS, Room No. 10/11/12, 2nd Floor, Saraf Primeses Bldg., Khau Gully Corner, 15/19 1st Agyari Lane, Zaveri Bazar, Mumbai – 400003 (Time : 2pm to 7pm)
Mobile – 9820393519

संकेत गांधी – 76201 60095

Faithbook : 81810 36036 contact@faithbook.in

स्व का अध्याय = स्वाध्याय

सादर प्रणाम,

अनंत ज्ञानी तीर्थंकर का शासन स्वाध्याय पर खूब महत्व देता है। स्वाध्याय यानी कि स्व का अध्याय। सतत परभावों में – विभावों में भटकने वाली हमारी आत्मा को 'स्व' और ले जाने के लिए जो हमें प्रेरणा देता है वह स्वाध्याय है।

पूर्वकाल से गुरु भगवंतों ने हमारे पर उपकार करके तन तोड़ मेहनत की और श्रुत की विरासत हमें दी। किंतु मंद मति ऐसे हमारे दिमाग में यह ज्ञान उतरता नहीं है। इसलिए वर्तमान कालीन गुरु भगवंतों हम उपकार करके ऐसे अद्भुत लेख लिख कर ज्ञान प्रदान करते हैं।

आशा है, कि पाठकों यह लेखों को पढ़कर अपने ज्ञान में सम्यक् ज्ञान में अभिवृद्धि करेंगे।

– नरेंद्र गांधी, संकेत गांधी

INDEX

आहार का मन-आत्मा के साथ संबंध। 01
पू. ग. आ. श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

चढ़ावा पैसों के आधार पर ही क्यों बोला जाता है? 04
पू. आ. श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

Everything is Online, We are Offline 9.0 09
पू. मु. श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

श्रावक का गुणवैभव 12
प्रियम्

गोडीजी का इतिहास – 3 15
पू. मु. श्री धनंजय विजयजी म.सा.

महादानी श्री गौतमस्वामी 19
पू. मु. श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

यात्रा Accept से Respect की ओर 21
पू. मु. श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

Temper : A Terror – 14 23
पू. मु. श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

FaithbookOnline

You can Read our Faithbook Knowledge Book in English & Hindi on our website's blog Visit : www.faithbook.in

आहार का मन-आत्मा के साथ संबंध।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री राजेंद्र सूरीश्वरजी म.सा.

अच्छे बुरे आहार का परिणाम

आधुनिक युग में मन और आत्मा के आहार की उपेक्षा जान-बूझकर की जा रही है। हमारा मन भोग, विलास, अश्लील साहित्य, विकृत चिंतन का आहार कर रहा है। दुर्भाग्य से यह अहितकर मानसिक स्थिति सर्वत्र दिखाई पड़ रही है। बालकों, किशोरों और युवकों का मन हल्के चिन्तन रूपी का आहार कर रहा है। जिसका परिणाम असंतोष, विकृत अवस्था, अशांति, घृणा, क्लेश, कटुता के रूप में हमारे सामने है। जब मन ही अस्वस्थ हो तो आत्मा की स्वस्थता, निर्मलता और उज्ज्वलता कैसे संभव है?

आज सद्साहित्य के स्थान पर सिने-पत्रिकाएँ, सद् चिन्तन की जगह समाचार पत्र और संतपुरुषों के बदले हीरों-हीरोइनों के अर्धनग्न-विकारी चित्र, ब्लू-पोंन फिल्मों का आदर्श हमारी नई पीढ़ी के समक्ष है, जिससे सात्त्विकता का विनाश हो रहा है। संस्कृति प्रधान भारत देश के लिए यह कलंक का विषय है। दिन-प्रतिदिन संस्कृति का विनाश करे ऐसी विकृति बढ़ रही है।

बुद्धिशाली आत्माओं को आग लगने से पूर्व ही कुआँ खोदकर मन व आत्मा का रक्षण हो, उत्थान हो, इसके लिए उच्च विचार एवं आचार से जीवन-यापन करना चाहिए। इस जीवन को सफल बनाने के लिए Simple living and high thinking का मंत्र आत्मसात करना चाहिए।

खराब आहार के परिणाम

अभक्ष्य पदार्थों के खान-पान से मन की चंचलता, चित्त-विकार, आवेग, भावना, रुचि, विचार आदि शरीर में रहे सप्त धातुओं और अन्तःस्रावी ग्रंथियों में रासायनिक परिवर्तन होते है। The emotions have their biochemistry. चिड़-चिड़ापन, क्रोध, उत्तेजना-भड़कना, खीजना, बड़बड़ाना, जलना, ईर्ष्या, अनदेखापन, जहरीलापन, जुनून, तीव्र लालसा, निंदा, कटु वचन कहना, गालियाँ देना इत्यादि से मनुष्य का अंतर खलबला उठता है। हृदय की धड़कन में विकृति उत्पन्न हो जाती है, नाड़ी तेज चलती है। श्वास की गति अनियमित हो जाती है, शरीर के विविध रस सूख जाते है और अन्तःस्रावी पिंडों की क्रियाएँ वेगवती अथवा मंद हो जाती है। आरोग्य शक्ति और दीर्घायु होने के लिए शुद्ध और ताजा भोजन आवश्यक है। फास्ट फूड को लज्जतदार बनाने के लिए उपयोग में लिए गए विविध मसाले और एसेन्स भी अच्छी क्वालिटी के नहीं होते है। फास्ट फूड और प्रोसेस्ड फूड में डाले गए बुटिलेटेड हाइड्रोक्सी एनीसोल, मोनो सोडियम, ग्लुटामेट, एन्टी आक्सीडन्ट आदि शरीर को हानि पहुंचाते हैं। इस खाद्य सामग्री को फूलन न लगे इसलिए सोडियम प्रोपर्नेट और ज्यादा समय तक टिकाए रखने के लिए नाइट्रेड या सोडियम नाइट्रेड मिलाया जाता है।

मोनो सोडियम और ग्लुटामेट जैसे रसायन बच्चों को केन्सर और मस्तिष्क रोग पैदा कर सकते हैं, इससे दिल की धड़कन बढ़ती है, सिरदर्द होता है और फेफड़े बिगड़ते हैं। मुँह, छाती, गला, और चर्म रोग व अंगों की संवेदनशीलता घटने लगती है। जिन सोडियम आदि के संयोजन से खाद्य सामग्री को स्वादिष्ट बनाया जाता है, उससे दाँतो में सड़न, हृदय रोग, तीव्र रक्तचाप, फेफड़ों की बीमारी हो सकती है। बाजारु पेय, अचार, होट डोग, जैम, जेली आदि में आने वाले अमारन्थ से केन्सर होता है, और शरीर में रहे शुक्राणु की मात्रा घटती है, जिसका असर भविष्य में होने वाली संतति पर पड़ता है।

हमारे देश में बड़ी संख्या में लोग गाँवों में बसते हैं। उन्हें अभी तक इन्सटन्ट फूड के दूषण ने स्पर्श नहीं किया है। और महंगी कीमत के कारण भी यह निर्धन प्रजा के पास नहीं पहुंचा है। इस प्रकार इसकी महंगी कीमत गरीबों के लिए आशीर्वाद समान है, जिसके चलते वे खरीद नहीं पाते और रोग के भोग बनने से बच जाते हैं। जबकि श्रीमंत और नासमझ लोग रोग के भोग बनते जा रहे हैं। अस्पताल रोगियों से भरे पड़े हैं। इसलिए इंस्टेंट फूड का त्याग ही लाभप्रद है।

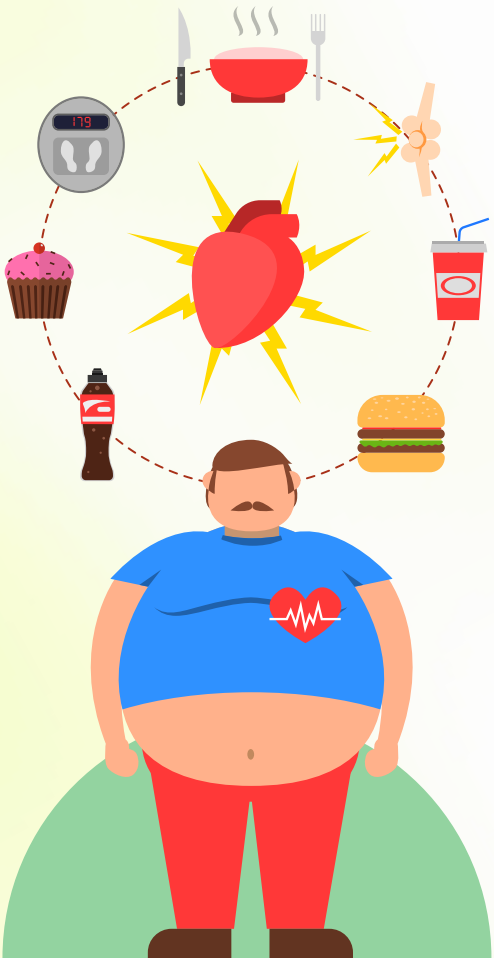

अच्छे आहार के परिणाम

शुभविचार, भावना, सद्विचार, आत्मविश्वास, श्रद्धा, भक्ति, धैर्य, आनंद, स्नेह, वात्सल्य, क्षमा, आशा, उच्चाभिलाषा, शांत विचारधारा, चित्त की प्रसन्नता, चेतना तंत्र, मज्जा संस्थान की शान्ति आदि शुद्ध भक्ष्य पदार्थों के सेवन से होती है। इससे मस्तिष्क और ज्ञान तंतु का शमन होता है। शरीर के रसों में ऐसे रासायनिक तत्त्वों की उत्पत्ति होती है, जिनसे शरीर व मन की तुष्टि तथा पुष्टि होती है। जीवन शक्ति संचित होती है। आयु सम्पूर्ण और स्वस्थता से जिया जाता है।

मनुष्यों के जीवन का सूक्ष्म अन्वेषण करके डॉ. रेमोन्ड पर्ल कहते है कि, चिंता से मुक्त, प्रसन्न चित्त, स्थितप्रज्ञ जैसी जिनकी प्रकृति होती है, वे तपस्वी ब्रह्मचारी और संयमी होते हैं। ऐसे मनुष्य अति दीर्घायु बनते हैं। यह सत्य तथ्य है कि ये लोग दौड़-धूप, व्यग्रता और व्याकुलता रहित और समता युक्त जीवन जीते हैं। इन सभी बातों से यह सार निकलता है कि दीर्घ और निरोगी जीवन के लिए हर मनुष्य को शुद्ध आहार-विहार, यम-नियम, संयम, तप-त्याग तथा अनासक्ति के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। भक्ष्य-शुद्ध आहार एवं शाकाहार से शरीर निरोगी, मन शांत, आत्मा स्वस्थ, मृत्यु समाधिमय और परलोक सद्गतिमय बनता है।

ध्यान के साथ आहार का संबंध

ध्यान का संबंध जितना मन के साथ है, उतना ही तन के साथ भी है। मस्तिष्क जितना हल्का होगा ध्यान भी उतना ही अच्छा होगा। मस्तिष्क का भार मुक्त और हल्का होना आमाशय, पाचनतंत्र और मल शुद्धि पर निर्भर रहता है। इनकी शुद्धि के लिए योग्य आहार पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। जिन्हें ध्यान करने की इच्छा हो उन्हें पेट को हल्का रखना और अल्प भोजन करना चाहिए; अयोग्य, अभक्ष्य, तीखा, विकारी भोजन, रात्रि भोजन, मादक पेय पीने का त्याग कर देना चाहिए।

अधिक खाने वाले व्यक्ति की अपान वायु दूषित हो जाती है। इससे मानसिक और बौद्धिक निर्मलता नहीं रहती, अभक्ष्य पदार्थों और अधिक भोजन से पाचन नहीं हो पाता, परिणामतः वायु विकार व गैस बढ़ती है। मन की एकाग्रता में वायु विकार सबसे बाधक तत्त्व है।

ध्यान के लिए ब्रह्मचर्य भी बहुत जरूरी है। मांस, मदिरा आदि महाविगइयाँ और अधिक दूध, घी आदि विगइयों से वीर्य की मात्रा बढ़ती है। यह कामवासना को उत्तेजित करती है। इससे मानसिक चंचलता रहती है। वीर्य स्खलन से स्नायु की दुर्बलता बढ़ जाती है। व्यक्ति का मन संतुलित नहीं रह सकता है। जिसके अभाव में ध्यान साधना संभव नहीं रहता। इसलिए छः विगई का अधिक सेवन और महाविगई - मधु, मदिरा, मांस, मक्खन आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन ध्यान का अभ्यास करने वाले के लिए हितकारी नहीं है।

प्रतिकार

चढ़ावा पैसों के आधार पर ही क्यों बोला जाता है?

पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरिजी म.सा.

प्रश्न :

हमारे यहाँ पैसों का बहुत बोलबाला है। प्रभु की प्रतिष्ठा है, तो चढ़ावा बोलो कि पहली पूजा कौन करेगा? मुमुक्षु को विदाई तिलक करना है तो चढ़ावा बोलो। हर जगह चढ़ावा... चढ़ावा... चढ़ावा... पैसा... पैसा... पैसा... ऐसा क्यों?

उत्तर :

जब अनेक भावुक आत्माएं भावना वाली हो तब किसकी भावना को सफल बनायें? किसे लाभ दें? इस निर्णय के लिए कोई तो आधार लेना ही पड़ेगा ना! वरना तो झगड़े ही झगड़े होंगे।

प्रश्न :

आधार होना चाहिए यह बात सच है, पर पैसों का ही आधार क्यों? पैसों का ही आधार बनाने से सर्वत्र श्रीमंतों को ही लाभ मिलता है, दूसरों को कभी भी लाभ नहीं मिल पाता, इसका क्या? इससे अच्छा तो तपस्या, सामायिक, नवकारवाली आदि का आधार लेने से उनको भी लाभ मिल सकेगा ना?

उत्तर :

मान लीजिए कि तपस्या का आधार रखें, तो मात्र तपस्वियों को ही लाभ प्राप्त होगा, बाकी के देखते रह जायेंगे। मान लीजिए सामायिक का आधार लिया जाये, तो जो लोग समय की तंगी होने के कारण सामायिक नहीं कर पाते, वे सभी हाथ मलते रह जायेंगे। हर एक आधार में ऐसा प्रश्न तो रहेगा ही।

You can't please each and everyone.

प्रश्न :

तो फिर कभी पैसों का, कभी तप का, कभी सामायिक का ऐसे बारी-बारी से आधार रखने चाहिये जिससे क्रमशः सभी को लाभ मिल सके।

उत्तर :

मान लो कि प्रतिष्ठा का प्रसंग है। कुछ लोग कहेंगे कि पैसों में चढ़ावा बोलो, कुछ कहेंगे कि तप में बोलो, तो कुछ कहेंगे माला में बोलो। 'मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना' फिर झगड़े ही झगड़े होंगे। और जिनको प्रश्न खड़े करने ही हो वे तो इसमें भी प्रश्न उठायेंगे कि हमारे यहाँ एकसूत्रता नहीं है, कभी पैसों से बोली होती है, तो कभी तप से, कभी माला से। उससे अच्छा तो कोई भी एक base निर्धारित कर देने में क्या दिक्कत है?

प्रश्न :

तो भले ही एक base तय कर लें! पर यह 'पैसा' ही क्यों? पैसों का आधार रखने से श्रीमंत के अलावा दूसरे लोगों को सिर्फ देखते ही रहना पड़ता है।

उत्तर :

'पैसा ही आधार क्यों?' इस प्रश्न के जवाब के बारे में बाद में सोचेंगे, पर 'दूसरों' को देखते ही रहना है, यह बात तो तप आदि को base में रखने में भी आने ही वाली है।

वस्तुत: 'दूसरों को देखते ही रहना है' यह बात सौ फीसदी सच है, ऐसा भी नहीं है।

पहली पूजा का लाभ भले ही चढ़ावा बोलने वाले श्रीमंत को मिलता है, पर उसके बाद बाकी सब को भी पूजा करने को तो मिलती ही है। और उसमें खुद यदि अपने भावों के उछलते हुए परिणाम से पूजा करे, तो लाख रुपये का चढ़ावा बोलकर पूजा करने वाले श्रीमंत को पूजा से जो लाभ प्राप्त होता है, उससे कईं गुना अधिक लाभ मिल सकता है। अरे! ऊपर से श्रीमंत के बोले हुए चढ़ावे की अनुमोदना द्वारा उसका लाभ भी पा सकता है।

प्रतिष्ठा आदि चीजें, जो एक को ही करने को मिलती है, उसमें दूसरों को सिर्फ देखते ही नहीं रहना होता है, वे भी अनुमोदना के द्वारा लाभ प्राप्त कर ही सकते हैं।

करण, करावण और अनुमोदन - तीनों समान फल देते हैं।

अरे! नारे लगाना, जय-जयकार करना, नृत्य करना, शुभ भावों को उछालना आदि इन सभी के द्वारा प्रतिष्ठा का एक माहौल भी खड़ा कर सकते हैं। इस तरह से प्रतिष्ठा के लाभार्थी का उत्साह बढ़ा सकते हैं। ऐसे माहौल और ऐसे उत्साह के द्वारा प्रतिष्ठा को प्रभावशाली बना सकते हैं। इससे सिर्फ स्वयं को ही नहीं, अपने परिवार को ही नहीं, अपने संघ को ही नहीं, बल्कि पूरे गाँव, नगर आदि को भी लाभ प्राप्त होता है।

बाकी निर्धन परिवारों को जिस तरह लाभ नहीं मिलता, उसी तरह सिर्फ एक श्रीमंत परिवार को

छोड़कर बाकी के सारे श्रीमंत परिवारों को भी लाभ नहीं मिलता। अरे! इनमें कईं श्रीमंत ऐसे होते हैं कि बहुत बड़ी रकम तक चढ़ावे को खींचने पर भी आखिर में थोड़ी रकम के Difference के कारण चढ़ावे को Miss करना पड़ता है। क्या उनको अफसोस करते रहना चाहिये? चढ़ावा लेने वाले की ईर्षा करते रहनी चाहिये या खुद भी उत्साह से झूमकर प्रतिष्ठा का रंग बढ़ाना चाहिये?

प्रश्न :

पर जिसको लाभ मिलता है, वह अहंकार करता है, और जिनको लाभ नहीं मिलता, वे दीनता का अनुभव करते हैं, उसका क्या?

उत्तर :

यह संभावना तो तप इत्यादि के आधार पर बोले गये चढ़ावे में भी कहाँ नहीं होगी? यह अहंकार, दीनता, ऊपर बताया वैसी ईर्षा, ये सभी अविवेक हैं। जिनको अविवेक का ही सेवन करना हो, उनका हम क्या कर सकते हैं? इस अविवेक का साम्राज्य तो संसार में कदम-कदम पर दिखाई देता ही है। एक श्रीमंत है, बाकी गरीब हैं, एक कार में घूम रहा है, दूसरे के पास साइकिल भी नहीं है। एक रूपवान है, दूसरा कुरूप है। एक की First Rank आती है, दूसरे एक मार्क के लिए पहला नंबर ही नहीं, मेरिट लिस्ट में भी नहीं आ पाते।

संसार में ऐसी विषमताएँ रहने ही वाली हैं। विवेक के सहारे अहंकार और दीनता दोनों से दूर रहना सीखना चाहिये। चढ़ावा प्राप्त करने वाले को ऐसा विवेक रखना चाहिये कि मुझसे भी ज्यादा संपत्ति वाले श्रीमंत हाजिर हैं, फिर भी उनको चढ़ावा नहीं मिला, और मुझे ही मिला, सच में! यह तो देव-गुरु की कृपा है।

प्रश्न :

यह तो खुद ने इतनी बड़ी रकम छोड़ने की भावना करके चढ़ावा बोला है, इसलिए लाभ मिला है ना!

उत्तर :

जीव का अनादिकाल का संस्कार तो जमा करना है, उसे छोड़ने की भावना हो रही है, यह तो प्रभु की कृपा होने से संभव होता है। **'श्री उपमिति भवप्रपंचा कथा'** नाम के ग्रंथ में बताया गया है कि प्रत्येक शुभभाव श्री अरिहंत परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होता है।

इसलिए, खुद को जो लाभ मिला है, यह देव-गुरु पसाय से प्राप्त हुआ है। ऐसा विवेक यदि ज्वलंत रहेगा, तो अहंकार का तो प्रश्न ही कहाँ?

जिनको लाभ नहीं मिला उनको भी विवेक रहकर ऊपर बताये अनुसार उछलते हुए शुभभावों से प्रतिष्ठा को प्राणवंत बनाना चाहिये। फिर दीनता की बात कहाँ?

परंतु, यदि अहंकार या दीनता दिखने को मिलती हो, तो यह उस व्यक्ति का अविवेक है, पैसों से चढ़ावे बोलने की पद्धति का यह दोष नहीं है। क्योंकि यदि अविवेक के नचाने से ही नाचना हो, तो तप इत्यादि से चढ़ावे बोलने में भी अहंकार-दीनता दिखने को मिल सकती है।

प्रश्न :

पर कभी-कभी ऐसा होता है कि जोश-जोश में बड़ा चढ़ावा बोल देते हैं, पर बाद में वह रकम भर नहीं पाते, क्योंकि खुद की उतनी हैसियत ही नहीं थी।

उत्तर :

विवेक तो सर्वत्र चाहिये ही। अपनी औकात के बाहर चढ़ावा बोलना ही नहीं चाहिए ना! यह तो ऐसा चढ़ावा बोलने वाले का अविवेक है। चढ़ावे की पद्धति का दोष नहीं है। और अविवेक तो तप आदि के चढ़ावे में भी हो ही सकता है। अरे! उसमें तो अविवेक की ज्यादा संभावना है। खुद कितनी रकम भर सकेगा? उसकी कल्पना तो व्यक्ति अपनी संपत्ति और कमाई के आधार से कर सकता है। तप में धड़ाधड़ बोली जा रही बोली में यह संभावना घट जाती है।

और पैसों से चढ़ावा लिया हो तो पेढ़ी की खाता-बही में उसका लेखा-जोखा होता है। इसलिए पैसे भर दिये जाने पर 'रकम अदा कर दी गई है' ऐसी ट्रान्सपरंसी भी रहती है। तप आदि में यह कैसे रहेगी? इसलिए तप आदि से चढ़ावा लेने वाला बाद में वो तप आदि ना करे, ऐसी संभावना भी ज्यादा रहती है। पर पैसों से चढ़ावा लेने वाले को खयाल रहता है कि बही में मेरे नाम की रकम बाकी है। इसलिए उस रकम को भरने की जिम्मे-वारी उसके सिर पर रहती है। खर्च आदि में काबू में रखकर, कुछ ना कुछ adjustment करके वह पैसा भरता रहता है। और क्रमशः संपूर्ण रकम भरपाई करके ही चैन की साँस लेता है।

इस परिप्रेक्ष्य में तो पैसों का चढ़ावा ही योग्य साबित होता है। दूसरी भी अनेक दृष्टि से यह योग्य साबित होता है।

एक पंथ दो काज, यह सूत्र तो सभी को स्वीकार्य है। कोई भी संघ या संस्था बिना पैसे के नहीं चलते हैं। आज के महंगाई के जमाने में तो कदम-कदम पर बड़ी रकम की जरूरत पड़ती रहती है। पैसों से चढ़ावे बोलने से यह प्रयोजन अच्छी तरह से पार पड़ जाता है।

जगद्गुरु श्री हीरसूरि महाराजा को प्रश्न पूछा गया कि प्रतिक्रमण में सूत्र बोलने के चढ़ावे बोलना -

क्या यह योग्य है? तो पूज्यश्री ने जवाब दिया था कि, यह सुविहित परंपरा नहीं है, फिर भी हमें उसका निषेध नहीं करना चाहिये। क्योंकि उसके बिना कईं स्थानों का निभाव होना मुश्किल हो जाता है।

भव्यमंदिर, बड़े उपाश्रय, सैकड़ों-हजारों आराधकों की विविध आराधनाएं यह सब क्या बिना पैसों के संभव है?

जिस धर्म को आप नहीं मानते, वैसे धर्म के कार्य-क्रमों के लिए भी आपके पास से जोर-जबरदस्ती पैसा लिया जाता है ना! हमारी संख्या तो बहुत छोटी है, फिर भी अन्यधर्मियों के पास से तो छोड़िए, जैनों के पास से भी धाक-धमकी से एक पैसा भी कभी नहीं माँगते। इसमें इस पैसों से बोले गए चढ़ावे का भी प्रभाव होता है।

हमारे श्रावकों के सिर्फ 5-10-15 घर ही हों, ऐसे छोटे गाँव-शहरों में भी प्रभु का मंदिर भव्य आलीशान होता है।

जहाँ से व्यापार आदि कारण श्रावक परिवार अन्यत्र स्थानांतरित हो गये, गुजरात, राजस्थान आदि के ऐसे गाँवों में भी मंदिरों का बहुत अच्छे से जतन किया जाता है।

छोटे गाँव के जिनालयों का भी कालांतर से जीर्णोद्धार होता रहता है, जिससे मंदिर सुरक्षित रहते हैं। सैकड़ों तीर्थ आज भी साधकों के लिए साधना केंद्र बन रहे हैं।

विहारमार्ग में आने वाले छोटे-छोटे संघ भी विहार करके पधारने वाले श्रमण-श्रमणी भगवंतों की आवश्यक वेयावच्च निःसंकोच कर सकते हैं।

ये, और ऐसे अन्य प्रयोजनों में भी, सभी में पैसों से चढ़ावे बोलने की हमारी प्राचीन परंपरा का बहुत बड़ा योगदान है, यह कभी भी भूलने जैसा नहीं है।

यदि पैसों से चढ़ावे बोलना बंद करके, तप आदि से चढ़ावे बोलना चालू हो जाये तो इन सभी की क्या हालत होगी? यह हर एक को शांति से सोचने जैसा है।

Everything is Online, We are Offline 9.0

पूज्य मुनिराज श्री निर्मोहसुंदर विजयजी म.सा.

फेथबुक के प्लेटफार्म से हमने एक साल पहले जो-जो बातें बताई थी, वो बातें आज सच साबित हो चुकी हैं, इसका हमें आनंद भी है और अपरंपार दु:ख भी।

हमने गत साल बताया था कि, वर्तमान रोग में बताई जा रही दवाई कितनी कारगर होगी, वह खोज का विषय है, मगर ये दवाई देने के लिए लोगों में भय का माहौल जरूर खड़ा किया जायेगा। जो भी मेरे जैसे लोग इनकी भ्रमजाल में एवं भयजाल में नहीं फँसेंगे, वैसे लोगों को अन्य तरीके से परेशान किया जायेगा। राशन-पानी, सरकारी सहायता, बिजली, फोन का सिम, बैंक अकाउंट, मंदिर, धर्मस्थान, सामाजिक त्यौहार से लेकर दुकान और घर तक बंद कर देने की धमकी, दादागिरी और प्रेशर। और फिर भी ना माने तो पुलिसफोर्स लगाकर, घेरकर, पकड़कर जबर-दस्ती इंजेक्शन की सुई घुसाने की अंतिम चेष्टा।

बाप रे बाप...

मेरी दृष्टि में इससे बड़ा अन्याय और कोई नहीं हो सकता है। यह एक प्रकार का बलात्कार जैसा जघन्य अपराध है। माँ की उम्र की महिला को जबरदस्ती पकड़कर पुरुष पुलिस की उपस्थिति में महिला पुलिस गैरकानूनी तरीके से कपड़े हटा-कर दवाई कैसे दे सकती है?

मैंने गत साल जो-जो आकलन किये थे, वे सच सिद्ध हुए हैं। अब बात करनी है, भविष्यवेत्ताओं की...

आप सभी को पता ही है कि, कुछ बड़े-बड़े पद पर आसीन लोग भविष्यवाणियाँ कर रहे हैं। वे किस आधार पर कर रहे हैं, उसका रहस्य आम जनता नहीं जान पाती है। मगर, मैं इसका राज़ जरूर बताना चाहूँगा।

राज़ बताने से पहले मैं पूर्वभूमिका बताना चाहूँगा।

गत वर्ष जब डर का माहौल खड़ा हुआ था तब कुछ जानकार लोग बता रहे थे कि, ज्यादातर मौतें अस्पताल में ही हुई है। घर पर मरने वाले लोग ना के बराबर हैं, इसलिए हमें अस्पताल में जाने से डरना चाहिए या बचना चाहिए।

इसी प्रकार कुछ लोग ऐसा भी बता रहे थे कि महामारी की असली वजह कुछ फार्मा कंपनियों की गहरी साजिश है, इसलिए जिन्होंने टीका नहीं लगवाया हो, उन्हें भी कुछ नहीं होगा।

मगर गत साल के दावे इस साल झूठे पड़ते भी दिखे। जो अस्पताल नहीं गया था उसकी घर पर भी मृत्यु हुई। जो वृद्ध नहीं थे, ऐसे युवाओं की भी मृत्यु हुई। जिसने टीका नहीं लगवाया, ऐसे लोगों की भी अचानक मौतें हुईं।

ऐसी बातें देखकर या सुनकर कोई भी व्यक्ति असमंजस में पड़ जाये ऐसी पूर्ण संभावना है।

आप जानकर आश्चर्य करेंगे कि, सिर्फ शहर में ही नहीं, इस बार कुछ-कुछ गाँवों में भी मौत का प्रमाण अत्यधिक देखा गया, जहाँ टीकाकरण भी ना के बराबर हुआ था [हालांकि, इससे यह कतई सिद्ध नहीं होता है कि वर्तमान दवाई (टीका) वर्तमान महामारी में सुरक्षा प्रदान कर रही है, या उसके कोई भी प्रकार के side effects नहीं हैं।]

मैं ना तो यहाँ पर कोरोना के बारे में कुछ भी कहना चाहता हूँ, ना ही टीकाकरण के बारे में कुछ भी बोलना चाहता हूँ। मैं दो बातें यहाँ पर बताना चाहूँगा।

इस बार भरतपुर इत्यादि शहरों में घर-घर एलोपेथी दवाइयों की किट बाँटी गई। जिस किट में डोलो, एज़िथ्रोमाईसीन इत्यादि पेरासि-टामोल से युक्त दवाइयाँ थीं। लोगों को बुखार आने पर इसी को लेने की हिदायत दी जाती थी। साथ में टेलिमेडिसिन भी शुरू की गई, जिसमें आप अपने फोन पे Presto या Fine-me जैसी एप डाउन-लोड कर लो और डॉक्टर्स से फोन पर ही परामर्श लेकर अपनी दवाई स्वयं ले लो।

पूर्व में वैदराज हाथ की नब्ज देखकर, शरीर की क्षमता देखकर, रोग की स्थिति एवं लक्षण देख-कर, वातावरण की परिस्थिति देखकर दवाईयाँ देते थे और आज...?

आप जानकर चौक जायेंगे कि, पेरासिटामोल को विश्व की सबसे खतरनाक (Most Dangerous Drug) दवाई की सूची में स्थान मिला है और विश्व के कई देशों में पैरासिटामोल आज भी प्रतिबंधित है।

बुखार को सरलता से उतारने के दूसरे तरीके जब हमारे पास हो तो एक पर ही क्यों निर्भर रहें?

घर पर मृत्यु का एक कारण क्या यह नहीं हो सकता है कि, घर पर ही अपनी चिकित्सा करना, वो भी स्वयं के द्वारा ही।

हमनें तो ऐसे कईं लोगो किस्से देखे जो घर पर ही एलोपैथी लेने के चक्कर में बहुत ज्यादा परेशान हुए, उनकी मृत्यु तक हुई।

दूसरा प्रश्न, जिस गाँव में ना तो अस्पताल था, ना एलोपैथी दवाई, वहाँ पर मृत्यु प्रमाण क्यों बढ़ा?

मेरे पास कईं सारे गाँवो के ग्राउंड रिपोर्ट आये हैं, जो मैं आपको बताना जरूरी समझता हूँ।

उत्तरप्रदेश के जाफराबाद ग्राम सभा में पत्रकार राहुल पांधी पहुँचा। वहाँ सिर्फ 20 दिन में 32 मृत्यु हुई थी। राममनोहर दुबे (वहाँ के ही निवासी) ने साफ-साफ कहा, मेरी 45 साल की पत्नी की मृत्यु 5G टावर लगाने के बाद हुई है। जब से 5G टावर लगाया गया है (सिर्फ 20 दिन) तब से गाँव में हड़कंप मचा हुआ है।

जाफराबाद के आस-पास के गाँवो में अभी तक

5G टावर नहीं लगाये गये हैं तो वहाँ पर शांति है। जाफराबाद में जितनी भी मौतें हुई सभी 40/45/50 की उम्र के थे। सभी को साँस लेने में दिक्कतें आ रही थीं, यानी ऑक्सीजन की कमी महसूस हुई थी। वहाँ के ग्राम के प्रधान कुशवाहा ने अल्टीमेटम दे दिया है कि यदि सरकारी कर्मचारी इस टावर को नहीं हटाएँगे तो हम तोड़ डालेंगे।

हरियाणा के डल्ली गाँव के किसान जयपाल सिंह कुंडू ने भी इसी बात का जिक्र किया। जिस दिन से गाँव में 5G टावर इंस्टॉल किया गया। उसके कुछ घंटों में ही गाँव में मौतें होने लगी। कभी-कभी तो एक ही दिन में 4/5 मौतें हुई थी।

कुछ ही दिनों में यह आँकड़ा 65/70 तक पहुँच गया। इस गाँव में तो जवान लोग भी मारे गये थे। शुरु-शुरु में तो गाँव के लोगों को कुछ समझ में ही नहीं आया कि मौत की असली वजह क्या है? (यह बात मई महीने की है।)

आखिर सभी ने मिलकर 5G टावर की लाइन ही काट दी तो आप आश्चर्य करेंगे, बाद में एक भी मृत्यु नहीं हुई। और लगातार चल रहा मौत का सिलसिला गाँव वालों की सूझबूझ से थम गया।

जो हालत डल्ली गाँव की थी, वही हालत मोखरा, मुंडा, मांडोगी, कनड़ी और सिरसा जिले के कुछ गाँवों की थी। कहीं पर 15, कहीं पर 50, कहीं पर 40, कहीं पर 60 मौतें चंद दिनों में हुई थीं।

हरियाणा कुरुक्षेत्र के गाँव लट्ठा में लगे 'Jio' के टेलिकॉम टावर को जब 5G की फ्रीक्वेंसी में बदला गया तो जनता और किसान यूनियन ने इसका पुरजोर विरोध किया। जनता के विरोध से मजबूर होकर 19 मई, 2021 को अंबाणी कं. को वह टावर वापस अपनी पुरानी फ्रीक्वेंसी पर लाना पड़ा।

इसकी हकीकत जानने के लिए मैंने नोंइडा के पत्रकार महोदय श्री कपिल बजाज को पूछा, तो उनका कहना था कि, '5G एक मिलिट्री टेक्नो-लोजी है, जिसका इस्तेमाल शत्रुसेना को घेरने और मारने के लिए किया जाता है।'

आप सोचो, यदि यह बात सच है तो मुम्बई और दिल्ली जैसे शहरों में हुई अत्यधिक मौतों का सच भी आपके सामने बेनकाब हो जायेगा। अब लोग एकत्रित होकर सरकार की गलत नीतियों का विरोध करने जायेंगे, तो शायद एक अदृश्य शत्रु से उन्हें सबसे पहले लड़ाई लड़नी पड़ेगी और उसका नाम होगा- 5G।

अभी भी आप भविष्य के बारे में आशान्वित हैं, तो बता दूँ कि, जोन होपकिन्स यूनि. ने अभी से घोषित कर दिया है कि, सन् 2026 से 2028 तक Sparsh (स्पार्स) नामक वायरस तहलका मचाने वाला है। दुनिया इस वायरस के दुष्परिणाम से सचेत रहे, इसलिए हम आपको बता रहे हैं।

हकीकत कुछ और ही है। सन् 2026 से शायद 6G लॉन्चिंग की तैयारियाँ शुरू कर दी जाने वाली हैं। हमें बिल्कुल भी डरने की जरूरत नहीं है। हमें समस्याओं की जड़ को समझने की जरूरत है, यदि वो समझ में आ जाएगी तो उस जड़ को काटना भी सरल हो जाएगा।

(क्रमशः)

श्रावक का गुणवैभव

"प्रियम्"

5 गुण /

संघ के श्रावक बनने के लिए पांच गुण अति आवश्यक हैं।

1. ज्ञान

वर्षों की दैनिक साधना के बाद तत्त्वज्ञान की गहराई प्राप्त हो जानी चाहिये।

2. वैराग्य

नाम आदि दुन्यवी प्रलोभन के प्रति वैराग्य भाव होना चाहिये।

3. अध्यात्म

आत्मा के भीतर में उतरा हुआ होना चाहिये, भीतर से आध्यात्मिक परिणति की स्पर्शना होनी चाहिये।

4. समर्पण

गुरु को सर पर रखकर, सब कुछ उनके मार्गदर्शन के मुताबिक करता होना चाहिये।

5. शासनराग

तन, मन, वचन और जीवन में अविहड़ (अटूट) शासन राग होना चाहिये। जिनशासन को यथा-शक्ति अनुसरण होता जीवन होना चाहिये। मन का कोन-कोना जिनशासन की सेवा से रंगा होना चाहिये और रक्त की बूंद-बूंद में जिनशासन का ग्रुप होना चाहिये।

वस्तुपाल में ये सारे गुण थे। और इसीलिए वे संघ की सच्ची सेवा कर सके थे। जिसमें ये गुण ना हो, वह व्यक्तिगत अपमान को नहीं सह सकता, जिसमें ये गुण नहीं होंगे, वह नाम और पद की संपूर्ण स्पृहा नहीं छोड़ सकता, जिसमें ये गुण नहीं होंगे, वे अपने अहं को अखंड रखने के लिए संघ को खंडित कर देंगे, जिनमें ये गुण नहीं होंगे, वे अपने कषायों की गंदगी से संघ की गरिमा को मलिन कर देंगे।

गुण परिणति /

वस्तुपाल की गुणपरिणति
इस दूसरे श्लोक से भी प्रकट होती है।

स्वामिन! रैवतकाद्रीसुन्दरदरी-
कोणप्रणीताऽऽसनः,
प्रत्याहार मनोदरं मुकुलयन्,
कल्लोललोलं मनः।
त्वां चन्द्रांशुमरीचि चन्द्ररुचिरं,
साक्षादिवाऽऽलोकयन्,
सम्पद्येय कदा चिदात्मकपरा-
ऽऽनन्दोर्मिसंवर्मितम्? ।।

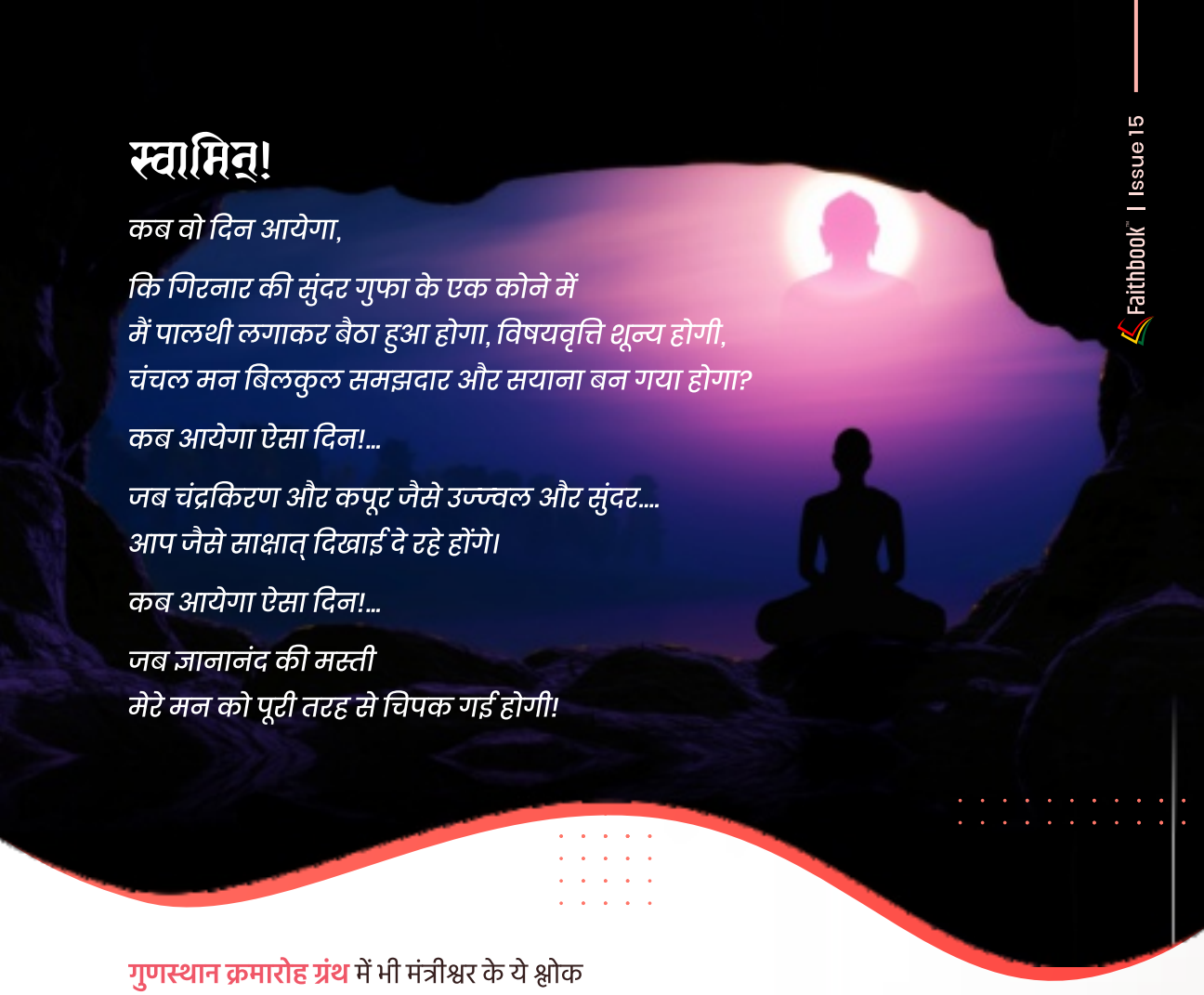

स्वामिन्!

कब वो दिन आयेगा,

कि गिरनार की सुंदर गुफा के एक कोने में
मैं पालथी लगाकर बैठा हुआ होगा, विषयवृत्ति शून्य होगी,
चंचल मन बिलकुल समझदार और सयाना बन गया होगा?

कब आयेगा ऐसा दिन!...

जब चंद्रकिरण और कपूर जैसे उज्ज्वल और सुंदर....
आप जैसे साक्षात् दिखाई दे रहे होंगे।

कब आयेगा ऐसा दिन!...

जब ज्ञानानंद की मस्ती
मेरे मन को पूरी तरह से चिपक गई होगी!

गुणस्थान क्रमारोह ग्रंथ में भी मंत्रीश्वर के ये श्लोक देखने को मिलते हैं।

इस श्लोक के दो अर्थ हैं

1 छंदोबद्ध रचना 2 यश।

मंत्रीश्वर के ये श्लोक उनकी रचना भी है,
और यशपताका भी है।

साधना की प्यास, संसार का वैराग्य, शासन का राग, आत्मरस, अध्यात्म प्रेम, वैभव की अनासक्ति आदि गुण इस श्लोक में नजर से नहीं हटते।

गुण शून्य अस्तित्व इस पद का और खुद का उपहास है।

मुझे समझ में नहीं आता कि किस तरह पद के लिए फॉर्म भर सकते हैं?

पद के लिए किस तरह हाथ-पैर मार सकते हैं?

किस तरह Election में खड़े रह सकते हैं?

और कौनसा मुँह लेकर चुनाव का प्रचार कर सकते हैं?

पद की लालसा वाले लोग संघ की क्या सेवा करेंगे?

जिनको जिनशासन की कोई भी समझ नहीं है, वे शासन का क्या विकास लेंगे?

जिनके अंतर में कषाय का तांडव चलता हो, वे शासन समर्पण कैसे दिखा सकेंगे?

यद्यपि सारे पदाधिकारी ऐसे नहीं होते,
पर योग्यता बहुत कम लोगों में होती है।

क्या करें इस परिस्थिति में? पदाधिकारियों के सामने मोर्चा निकालें? अंदर-अंदर लड़-झगड़ कर आहूति दे दें? पदाधिकारियों को बिन माँगे उपदेश देने जायें? या फिर अंधों को आईना दिखाने की कोशिश करें? पक्के घड़े पर काँठा नहीं लगता!

PLAN – 0 to 16

मुझे ऐसा लगता है कि इस रास्ते से सफलता मिलने की संभावना बहुत कम है, लेकिन नुकसान होने की संभावना ज्यादा है। क्या करना चाहिये? कच्चे घड़े पर मेहनत करनी चाहिये। जो आने वाले कल में पदाधिकारी बनने वाले हैं, उनके लिए कमर कस के काम करना चाहिये। हमारे पास ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि जिससे नवजात बालक को भी, अथवा जो अभी जन्मा भी नहीं है, उसे भी अविहड़ शासन राग में डुबोना चालू कर दिया जाये। तत्त्वज्ञान, कथा, उदाहरण, अभ्यास-क्रम, चित्र, परीक्षाएं, प्रोजेक्ट्स, प्रैक्टिकल्स आदि के द्वारा यह प्रशिक्षण अविरत चलता रहे। ऐसा 0 से 16 वर्ष तक का पूरा सिलेबस होना चाहिये, जो आचार, विचार, ज्ञान, परिणति, शासन राग, समर्पण हर तरह से श्रेष्ठ कक्षा के व्यक्तित्व का निर्माण करे।

आने वाले कल में उनमें से ही साधु-साध्वीजी, आचार्य, पदस्थ और गच्छाधिपति बनेंगे। उनमें से ही संघ और संस्थाओं के पदाधिकारी बनेंगे। उनमें से ही विविध कार्यकर्ता बनेंगे। उनमें से ही भविष्य के परिवारों के मुखिया बनेंगे और पूरे संघ का नक्शा बदल देंगे।

हमारी बहुत सारी निष्फलताओं का मूल यह है कि, हमारे पास दीर्घदृष्टि पूर्वक आयोजन नहीं है। लोग बीमार होते रहते हैं, हम दवाई करते रहते हैं। दो-पांच लोगों को अच्छा हो जाये तो हो जाये, बाकी के मरते रहते हैं। हमने कितनी दवाइयाँ की, उसका ढिंढोरा हम पीटते रहते हैं। पर यह बीमारी आती कहाँ से है? बीमारी आये ही नहीं, उसके लिए क्या करना चाहिये? इस दिशा में हमारी दृष्टि जाती ही नहीं है।

0 से 16 वर्ष तक के सिलेबस के लिए संघ Maximum समय और संपत्ति का हिस्सा अगर दे तो, यह योगदान जिनशासन के प्रत्येक क्षेत्र में पहुँचेगा,

यह योगदान जिनशासन की सभी समस्याओं को जड़ से उखाड़ कर फेंक देगा।

इस योगदान से संघ की बेटियाँ संघ में ही रहेगी।

इस योगदान से संघ के बेटे, संघ के ही बेटे रहेंगे।

इस योगदान से 5वें आरे में चौथा आरा प्रवर्तेगा।

इस योगदान से भारत में महाविदेह का समव-सरण होगा।

इस योगदान की जब फसल उगेगी तब जिस दृश्य का सृजन होगा, उसे देखकर हमारी आंखों में आनंद के अश्रु आ जाएंगे।

गोडीजी का इतिहास - 3

पूज्य मुनिराज श्री धनंजय विजयजी म.सा.

प्रभु का पुन:प्रागट्य

हुसैन खान के आक्रमण से भयभीत हुए श्रेष्ठी खेत-सिंह की तरह अनेक श्रेष्ठी अपने-अपने आवासों को छोड़कर पाटण को अलविदा कर चुके थे।

शून्य घरों की तरह अनेक भवन भी खाली और सुनसान पड़े हुए थे।

राजभवन और महल भी अस्त-व्यस्त थे।

पाटण की दुर्दशा देखकर हुसैन खान फिर से पाटण की शोभा पूर्ववत् करने के अथक प्रयत्न करने लगा।

अनेक वणिक-व्यापारियों को निमंत्रण दिया और अनेक राजाओं को अपने वश में कर लिया।

उस समय की कठिनाई कहो या बदकिस्मती, पर वह मुस्लिम बादशाह हुसैन खान हिन्दुओं की बेटियों और राजकुमारियों को बेगम बनाता था।

और हिन्दुओं के साथ अपनी मुस्लिम लड़कियों की शादी करवाकर सभी को इस्लामिक बनाता था, और धर्म का विस्तार करता था।

इस तरफ, जहाँ खेतसिंह ने प्रभु पार्श्वनाथ की प्रतिमा को जमीन में गाड़कर छिपा दिया था, उसके आसपास की भूमि पर बादशाह ने अश्व-शाला बनायी थी।

और जहाँ पर प्रभु की प्रतिमा गड़ी थी, ठीक उसी जगह पर बादशाह के जातिवंत अश्व को बाँधा जाता था।

वह अश्व रोज अपने पैरों की नाल से जमीन खोदता रहता था। अश्वपालक सोचता है कि, यह अश्व रोज-रोज ऐसा क्यों करता है? इसलिए एक दिन वह अश्वपालक खुद ही जमीन खोदने लगा।

कुछ गहराई तक जमीन खोदने पर वहाँ से ताजे पुष्पों से पूजित खेतलवीर यक्ष से रक्षित पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा प्रकट हुई।

अश्वपालक ने वह प्रतिमा हुसैन बादशाह को सौंपी। प्रभुजी को निहारते हुए बादशाह आश्चर्य-

चकित होकर आनंद की अनुभूति करने लगा।

रानीवास की अनेक रानियों में से एक हिंदू रानी ने प्रभु के दर्शन करके कहा, "ये तो देवाधिदेव हैं, साक्षात् पयगंबर हैं, मनोवांछित पूरक हैं, सकल समीहित संपूरक जिनेश्वर देव हैं।"

प्रभु की महिमा सुनकर बादशाह प्रभुजी को उच्च आसन पर विराजमान करके नमन करने लगा और भावपूर्वक बंदगी करने लगा।

प्रभु का प्राकट्य् वर्ष: वि.सं. 1465, ई.सं. 1409

अर्थात् भूगर्भ के गुप्तवास के बीस साल बाद प्रभु ने फिर से दर्शन दिये।

मेधाशा का पाटण में पुनरागमन

"मेधाशा! यहाँ भूदेशर से अच्छा अब परदेश जाकर कमाना पड़ेगा, ऐसा लगता है। और आप तो पाटण की धरा से परिचित ही हो। इसलिए आप वहाँ पर जाओ, और यहाँ पर दुर्लभ हो ऐसी वस्तुएँ ले आओ।"

काजलशा की बात सुनकर मेधाशा प्रयाण की तैयारी में जुटे। काजलशा ने व्यापार में भागीदारी की और ऊँट, बैल आदि लेकर आए।

भूदेशर में अलभ्य वस्तुएँ लाकर लोगों की जरूरतों का लाभ उठाकर बेशुमार द्रव्य कमाने का नुस्खा काजलशा के हृदय में जगा था, और इसके लिए मेधाशा जैसा विश्वसनीय इंसान और कहाँ मिलता!

मेधाशा ने शुभ मुहूर्त में प्रयाण किया। अखंड सौभाग्यवती पत्नी मृगादेवी ने उनके भालप्रदेश पर कुमकुम तिलक और अक्षत लगाया। उसी ही समय पर दायीं ओर से पूर्ण कलश लेकर कुंवारी कन्याएँ गुजरीं।

प्रयाण करके कुछ कदम आगे बढ़े, उतने में कमल पुष्पों से भरी हुई टोकरी लेकर मालिन सामने आई है और मेधाशा का फूलों से स्वागत किया।

और आगे बढ़ने पर ग्वालिन दही लेकर आई। उसे कुछ द्रव्य देकर, खुश करके वे आगे बढ़े। तब कुछ ब्राह्मण पूजा के उपकरण लेकर सामने आए। मेधाशा ने उन्हें भी नमस्कार करते हुए शगुन दिया। और आगे चलने पर एक कदावर हाथी वहाँ से गुजरा और पक्षियों की मंगल आवाजें आईं।

इस प्रकार एक के बाद एक लगातार शुभ शगुन होते रहे और मेधाशा पाटण की ओर आगे बढ़ते रहे।

आखिर में अविरत यात्रा करते-करते वे पाटण नगर में पहुँचे। हवेली जैसा एक मकान किराये पर लेकर वे उसमें निवास करने लगे।

भाग्य खुले, प्रभु मिले

घना अँधकार छाया हुआ था। आकाश में चंद्र अपनी चांदनी बिखेर रहा था। वातावरण में नीरव शांति थी। मध्य रात्रि से ज्यादा समय व्यतीत हो चुका था।

इतने में अचानक मेधाशा के शयनखंड़ में चारों और प्रकाश ही प्रकाश फैला, और खेतलवीर यक्ष प्रकट हुए।

जिसके एक हाथ में खड्ग, दूसरे हाथ में काला नाग, तीसरे हाथ में रुद्राक्ष की माला और चौथा हाथ वरद मुद्रा में था। यक्ष ने मेधाशा को ना तो डराया, ना ही उनके मन में भय पैदा किया।

यक्ष को अपने ज्ञान में प्रतीत हुआ कि, मेधाशा पाटण में पधारे हैं, इसलिए प्रभु पार्श्वनाथ का मिलाप करने के लिए वे प्रेम भरा आमंत्रण देने हेतु प्रकट हुए थे।

"मेधाशा! आपके पिता ने जो पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा भरायी थी वह हुसैन खान के रानीवास में है। कल सुबह में बादशाह को 125 टके (उस समय की मुद्रा) का नजराना देकर प्रभुजी को ग्रहण कर लेना।"

मात्र इतनी बात कहकर यक्ष अंतर्ध्यान हो गये।

मेधाशा तो 'यह स्वप्न है या सत्य?' ऐसे आश्चर्य के अनुभव के साथ आनंद से रोमांचित हो गए।

इस तरफ, यक्ष खेतलवीर राजमहल में पहुँचा है और निद्रादेवी के आधीन सोये हुए बादशाह हुसैन खान को अपना रौद्र स्वरूप दिखाकर डराने लगा।

भय से काँपकर बादशाह तलवार लेकर तुरंत उठ खड़ा हुआ। पर,यक्ष के स्वरुप को देखकर उसकी बुद्धि सुन्न हो गई।

"हुसैन खान! तेरे राज्य में पारकर देश के भूदेशर नगर से मेधाशा श्रेष्ठी आये हैं। कल सुबह वे 125 टके लेकर तेरे पास आएँगे, तब तेरे पास जो श्री पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा है, उसे बहुमान पूर्वक उस श्रेष्ठी को सौंप देना। यदि तू नहीं देगा तो तेरे और तेरे राज्य के सौ-सौ टुकड़े कर डालूँगा।

यक्ष के डरावने और धमकी भरे शब्दों को सुनकर क्रोधित हुआ बादशाह शय्या से उठकर तलवार लेकर यक्ष के सामने प्रहार करने गया, पर यक्ष अदृश्य हो गया।

पहरेदार तलवार के साथ उठे हुए बादशाह को देखकर दौड़कर बादशाह के पास आए। बादशाह ने सिर्फ समय पूछा, तो सेवकों ने कहा कि, "बादशाह सलामत! रात्रि का अंतिम प्रहर (3 घंटे) बाकी है।"

बादशाह ने चौकीदारों को रवाना किया, और खुद

खयालों में गुम हो गया। एक तरफ भय था, तो दूसरी तरफ अल्लाह की तरह जिनकी बंदगी की, उनके वियोग की पीड़ा थी।

सूर्योदय होते ही बादशाह प्रभातिक कार्यों को पूर्ण करके आज जल्दी राजदरबार पहुँचे। जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रहे हों, वैसे बार-बार मुख्य द्वार की ओर नजर करने लगे। बादशाह आज बहुत बेचैन लग रहे थे।

और, मेधाशा ने भी शुभस्वप्न के संकेत अनुसार हर्षित हृदय से स्नानादि प्राभातिक कार्यों को पूर्ण किया और वस्त्र अलंकारों से सुसज्ज होकर भाल-प्रदेश पर तिलक करके स्वगृह से प्रस्थान किया।

अन्य श्रेष्ठवर्यों के साथ उसने राज दरबार में प्रवेश किया। बादशाह ने मेधाशा से उसका परिचय पूछा। मेधाशा द्वारा दिए गये स्व-परिचय के वर्णन से बादशाह को यकीन हो गया कि ये वही है, जिसके लिए मुझे यक्ष ने सूचना की थी।

खयालों में गुम हुए बादशाह को मेधाशा ने कहा, "आपके रानीवास में जो श्री पार्श्वनाथ भगवान की दिव्य प्रतिमा है, उसे मुझे सौंप दीजिए और मेरे ये 125 टके आप स्वीकार कीजिए।"

मेधाशा के एक-एक शब्द ने बादशाह के हृदय को चीर डाला। प्रभु के बगैर रहना पड़ेगा, ऐसी पीड़ा का अनुभव करते हुए बादशाह ने अपने दु:खी हृदय से जनानखाने में से प्रभुजी मँगवाकर मेधाशा को सौंप दिया।

प्रतिमा भराने वाले परिवार के गृहाँगन में प्रभुजी पुनः पधारे।

और वह साल था वि.सं 1470, ई.स.1414, यानी कि 5 वर्ष तक प्रभुजी बादशाह के राजमहल में रहे।

परमात्मा बनने के 20 Steps

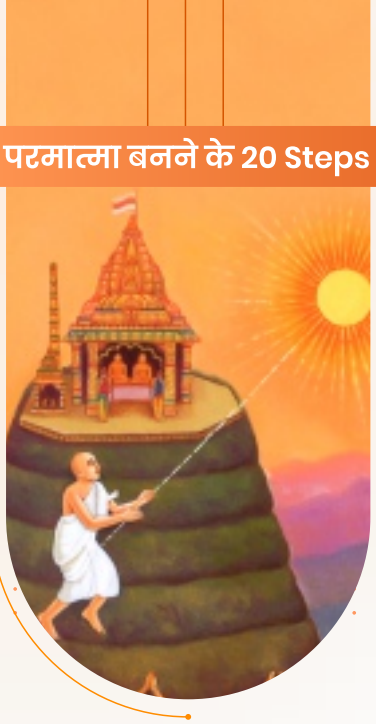

महादानी श्री गौतमस्वामी

पूज्य मुनिराज श्री तीर्थबोधि विजयजी म.सा.

Hello friends!

इस बार बीस स्थानक पद का 15वां पद आ गया है, जिसका नाम है **'गौतम पद।'** हालाँकि यह 'दान पद' के नाम से जाना गया है, पर फिर भी 'गौतम पद' के नाम से ही जगत में मशहूर है। क्योंकि जगत के दानवीरों की अग्रिम श्रेणी में अग्रिम दानवीर तो श्री गौतमस्वामी महाराजा ही थे।

उनके पास अनन्त लब्धियाँ थीं। हालाँकि उन लब्धियों का उन्होंने विशेष उपयोग नहीं किया था। सिर्फ दो-तीन बार ही, जब जरूरत पड़ी तब उन विशिष्ट शक्तियों का उपयोग किया था। एक बार तो सूर्य की किरणों को रस्सी की भाँति अवलंबन करके वे हजारों फीट ऊपर अष्टापद पर्वत के शिखर तक पहुँचे थे। बाद में जब वे नीचे उतरे, तब 1500 तापस उनके शिष्य बनने हेतु आतुर होकर कतार में खड़े थे। उन सभी को दीक्षा देने के बाद जब भिक्षा देने की बात आई, तब वे अपना पात्र लेकर भिक्षा हेतु निकले। कहीं से खीर मिल गई, और पात्रे में यथोचित प्रमाण से वहोर कर आये।

'इतने अन्न से 1500 साधुओं का पेट कैसे भरेगा?' नये-नये साधु भगवंत सोच में डूबे थे। परन्तु अनन्त लब्धिनिधान गोतमस्वामीजी का अंगूठा जैसे ही उस पात्र में गिरा, उसके साथ उनका संकल्पबल, लब्धिबल मिश्रित हो गया। और फिर क्या कहना था! 1500 मुनियों के पात्र भर जाने के बावजूद गोयम गुरु के पात्र की खीर उतनी की उतनी ही शेष थी।

हमको तो आज भी यह चमत्कार सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं, तो उन नूतन मुनिवरों, जिन्होंने यह चमत्कार आँखों के सामने घटता हुआ देखा था, उनकी क्या अवस्था हुई होगी?

परिणाम वही आया जो आना था। उस खीर को वापरते-वापरते सभी की आँखों से आँसू निकल आये, "हमारे गुरु कितने महान हैं? कितने दयालु हैं?" इसी भावधारा में चढ़ते हुए 500 श्रमणों को गोचरी करते-करते ही केवलज्ञान हो गया। बाकी के 1000 मुनियों को आगे चलते हुए केवलज्ञान हुआ।

और जब समवसरण में पहुँचे तब पता चला कि, ये तो सब केवली हो चुके। तब किसी ने कहा,

"अरे! दानी तो जो खुद के पास होता है, वही देता है, जबकि ये गोयम महाराज तो ऐसे दानी है, जो खुद के पास न हो वैसा केवलज्ञान सभी को देते हैं। यदि आप उनके शिष्य बनते हैं, और केवल

24 घंटे उस रजोहरण को अपने समीप रखते हैं तो केवलज्ञान का दान निश्चित ही समझिएगा। बोलिए महादानी श्री गौतमस्वामी महाराज की जय...”

बातें तो गोयम गुरु की ढेर सारी हैं। पर हमें आज उनसे अपने आप की तुलना करनी है।

लब्धियों का खजाना था उनके पास, फिर भी कभी किसी को बताते नहीं थे। यदि हमारे पास कोई नई ब्रांडेड चीज आए, या कुछ छोटा-मोटा ज्ञान आ जाए, तो भी हम इधर-उधर बताते हुए घूमते फिरते हैं।

50,000 केवलज्ञानी शिष्यों के गुरु थे वे स्वयं, परन्तु जरा सा भी अहंकार न था। हमें यदि 50,000 रुपये की लॉटरी भी लग जाए तो भी हम जमीन से ऊपर आकाश में उड़ने लगते हैं।

और इतनी सत्ता, इतना सामर्थ्य, इतनी शक्तियाँ, इतना कुछ होने के बावजूद वे अपने धर्मपिता, धर्मदायक, धर्मनायक, धर्माचार्य, धर्मगुरु, परमात्मा महावीर के चरणों में अज्ञान बालक की भाँति सिर झुकाकर बैठते थे। सब जानते हुए भी प्रभु को प्रश्न पूछते थे। प्रभु की देशना सुनते वक्त उनका चेहरा मानो गुलाब की भाँति खिल उठता था, उनका हृदय विस्मय भाव से परिपूर्ण हो जाता था। यह था परम विनय, जो गौतमस्वामीजी को उन्नत लब्धिनिधान बनाता था।

यदि हम, आप और मैं, अपने परमोपकारी माँ-बाप और बड़े बुजुर्गों के प्रति नियमित रुप से विनय से अवनत नहीं होते है, उनकी कही गई कड़वी-मीठी बात हमें नहीं सुहाती है, तो समझना कि हम गौतमस्वामी बनने की तो दूर, गौतमस्वामी के चरण के अंगूठे के पास बैठने की भी बराबरी नहीं रखते।

चलिए गुरु गौतम के गुण गाते हैं।

॥ गौतम पद ॥

(पहेली नज़र में ऐसा...)

गौतमस्वामी जी की लब्धि है कमाल,
गौतम की किरपा कर दे निहाल,
विनय की मूर्ति है जिनकी पहचान,
महावीर के दिल में इनका है स्थान...
वीर के पट्टधर गणधर अग्रसर;
सूरिमंत्र के सूत्रधार...
किरपा बरसा, अंतर में आ, सूना है सूना मेरा जिया;

मेरे पापों का कोई अंत ना, और तेरी लब्धि भी अनंत है;
अवगुण को मेरे तू न देखना, तू हे दानी, महाज्ञानी;
मुझ पर बरस, थोड़ा तरस, मेरे भीतर की रूखी सूखी धरा...

चौदह सौ बावन गणधर हुए, उनमें से तेरा इक नाम है;
मेरे जैसों की तो जिंदगी, गई गुजरी, यूं ही बिखरी;
तुमको नमन करना हरदम, तेरा शिष्य मुझे अपना लेना...

जैसे कोई पत्थर पतवार पर, जुड़ जाने से पूरा सागर निरे;
तू मेरी उंगली वैसे थाम ले, मुझे ले चल, तेरे संग-संग;
तेरी दया, मेरी वफा, इतना ना तड़पा मुझको मेरे खुदा...

यात्रा Accept से Respect की ओर

पूज्य मुनिराज श्री कृपाशेखर विजयजी म.सा.

एक रशियन तत्त्वचिंतक, जो बुद्धि से ज्यादा हृदय को प्रधानता देता था, ज्ञान के फलस्वरुप प्रसन्नता का हर पल वह अपने जीवन में अनुभव करता था। उसे एक बार राजा ने किसी अपराध के कारण जेल में बंद कर दिया।

7 दिनों के बाद राजा यह देखने के लिए आया कि, शांति-क्षमता और प्रसन्नता की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले इस तत्त्वचिंतक की जेल के सलाखों के पीछे क्या हालत है? वह कितना तड़प रहा है, जरा देखता हूँ।

राजा ने जेल में आकर देखा तो, वह तत्त्वचिंतक शांति से किताब पढ़ रहा था। चेहरे पर प्रसन्नता छायी हुई थी।

राजा ने पूछा, "कैसे हो?"

तत्त्वचिंतक ने कहा, "राजन्! बड़ा आनंद है! सैकड़ों किताबें पढ़ने की मेरी बरसों से तमन्ना थी, पर बाहर के तत्त्वप्रचार और लोकसेवा के कार्यों के बीच समय नहीं मिल पाता था। आपने मुझे जेल में डालकर बहुत अच्छा काम किया। किताबें पढ़ने की मेरी तमन्ना पूर्ण होने का बहुत आनंद है।"

राजा ने सोचा, 'मेरी जेल में यह खुश कैसे रह सकता है?' राजा ने जेलर को कहा, "इसकी सारी किताबें छीन लो, और उसे एक भी नयी किताब पढ़ने के लिए मत देना।"

राजा की आज्ञा का पालन किया गया।

7 दिनों के बाद राजा फिर से देखने के लिए आया। अब की बार राजा ने जो दृश्य देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गया। तत्त्वचिंतक मस्ती से कुछ लिख रहा था।

राजा ने पूछा, "कैसे हो?"

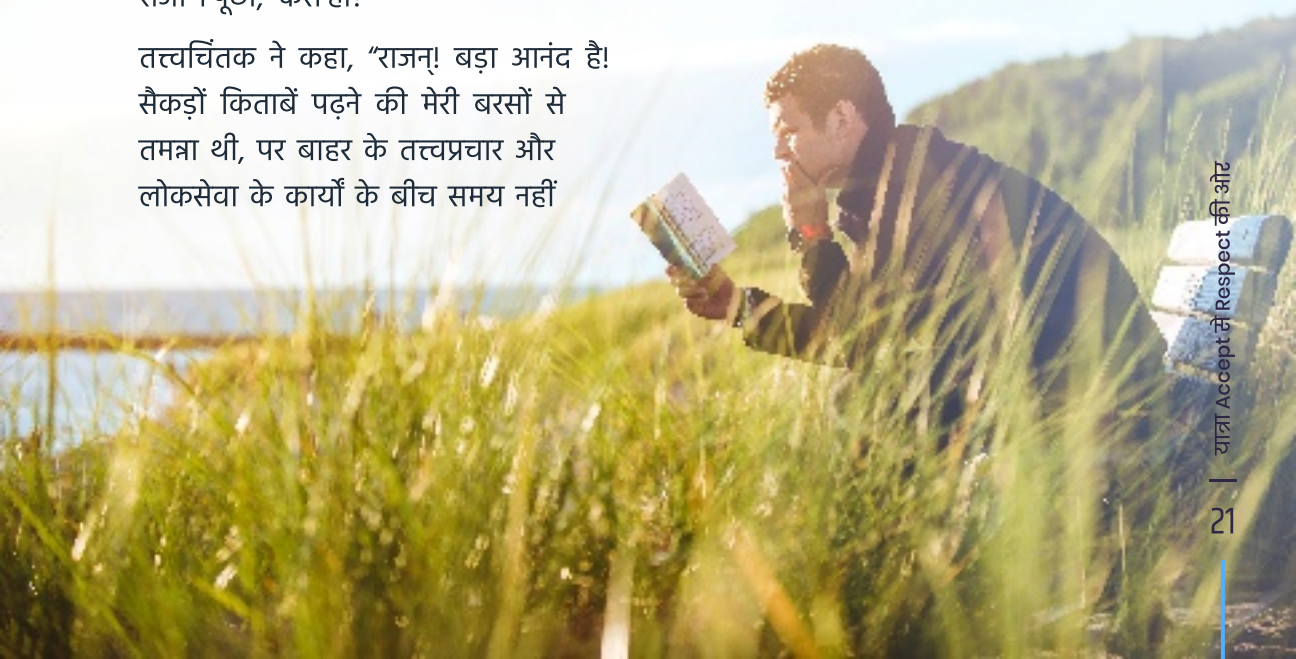

तत्त्वचिंतक बोला, "राजन्! मेरे प्रवचन 1000-5000 लोगों तक ही पहुँच पाते थे। मेरी बरसों की आरजू थी कि यदि वे किताब के रुप में लिखे जाएँ तो सिर्फ रशिया में ही नहीं, पूरे विश्व भर में उसका प्रचार हो जाये। पर बाहर था, तब लिखने का समय ही नहीं मिल पाता था। आपने बहुत ही अच्छा किया। यहाँ पर मेरा किताब लिखने का स्वप्न परिपूर्ण हो गया। इस बात का मुझे बहुत ही आनंद है।

राजा ने तुरंत जेलर को निर्देश दिए, "जेलर! इसके पास से कागज-पेन, सब कुछ ले लो, इसे लिखने के लिए कुछ भी नहीं देना है।"

7 दिनों के बाद राजा फिर से देखने के लिए आया। तत्त्वचिंतक प्रशांत और प्रसन्न चेहरे से आत्मध्यान में डूबा हुआ था।

राजा ने पूछा, "कैसे हो?"

तत्त्वचिंतक बोला, "परम आनंद है। आज तक लोगों के आनंद के लिए बहुत सोचता था, बहुत दौड़ता था, पर आत्मा के लिए कुछ नहीं किया। आपका बड़ा उपकार कि मुझे मेरी आत्मा में लीन होने का अवसर दिया।"

राजा मन ही मन भड़क उठा, 'इसे किस तरह दुःखी करूँ?'

आखिर में राजा ने कहा, "मान ले, कि जिस मन से तू अभी परम आनंद का अनुभव कर रहा है, तेरा वह मन ही मैं छीन लूँ तो?"

सुनकर तत्त्वचिंतक नाचने लगा!

राजन्! समस्त धर्मग्रंथों का सार तो यह ही है, "शून्यमनस्क बन जाओ"! मैं तो दोनों हाथ जोड़कर कहता हूँ, जल्दी से मेरा मन ले लो आपका बड़ा उपकार मानूँगा।"

अब ऐसे संत को कौन दुःखी कर सकता है, जो शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि तमाम विपरीत परिस्थितियों का स्वीकार कर सकता है? वह इस दुनिया का सम्राट है।

एक बढ़िया Quotation याद रख लो।

"आप आने वाली हर एक परिस्थिति को Accept करना सीख लो, जिंदगी आपको अवश्य Respect देगी!

श्रमण भगवान महावीरस्वामी ने 12 ½ वर्ष के साधना काल में जो भी परिस्थिति थी, देव, मानव या पशु की ओर से, वस्तु, व्यक्ति या वातावरण के रुप में, उन सभी का सिर्फ स्वीकार ही किया था। ना तो प्रतिकार किया, ना ही संघर्ष किया, ना ही वेदना का अनुभव किया।

तो चलिए संकल्प करते हैं,

आज आने वाली किसी भी एक विपरीत परिस्थिति का प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करूँगा और मन को स्वस्थ रखूँगा।

Temper : A Terror – 14

पूज्य मुनिराज श्री शीलगुण विजयजी म.सा.

(मंत्री मित्रानन्द शव के द्वारा कहे गए वचनों को भूल नहीं सकते थे, इसलिए राजा से मौन अनुमति लेकर पाटलिपुत्र छोड़कर कहीं और चले गए। तत्पश्चात आगे क्या होता है पढ़िए...।)

भेड़–बकरियों की तरह सभी दासों को बाँध दिया गया था। वहाँ रहे हुए दासों की हालत अति दयनीय थी। उन सभी के कपड़े, कपड़े नहीं थे, पर फटे हुए चिथड़े थे।

डाकू जैसे दिखने वाले पाँच व्यक्ति वहाँ आए।

"ऐ! यहाँ पर मालिक कौन है?" दासखाने से आ रही दुर्गंध के कारण मुँह बिगाड़कर एक डाकू ने पूछा? एक चालीस जितनी उम्र का, व्यापारी जैसा, सफेद त्वचा वाला व्यक्ति बाहर आया।

"क्या है भाई? इस तरह अकड़कर क्यों बात कर रहे हो?" फारसी भाषा के लहजे वाली भाषा में व्यापारी ने डाकू को धमकाया। डाकू क्षण के लिए तो भौंचक्का रह गया। उसके साथ इस तरह से बात करने की ताकत जंगल में किसी की भी नहीं थी।

"बोलो! जल्दी काम बोलो! मुझे और भी बहुत काम है।" अपना मुँह देख रहे डाकू को व्यापारी ने कहा। व्यापारी के पूरे शरीर पर सोने के गहने चमक रहे थे। डाकू के चेहरे पर गुस्सा आ गया, पर वह शांत ही रहा। उसे पता था कि, इस गाँव के व्यापारी ऐसे पीतल जैसे स्वभाव के ही है।

"सेठजी! आपके लिए एक काम की चीज लाया हूँ, आप कहो तो दिखा दूँ।" फारसी व्यापारी के सामने जंगल के शेर ने बिल्ली जैसी आवाज से वचन का उच्चारण किया।

"क्या है? अपने हाथ में रहे हुए पान को व्यापारी ने मुँह में रखा।"

पीछे खड़े हुए डाकू के साथी एक व्यक्ति को आगे लेकर आये। उस व्यक्ति के चेहरे पर नूर था। पर अभी के उसके हालात देखकर कोई भी उसे पहचान नहीं सकता था। उसकी एक आँख काली हो गई थी, क्योंकि उस पर किसी ने मुक्का मारा था।

व्यापारी ने ऊपर से लेकर नीचे तक उस व्यक्ति को देखा।

"ठीक है...। इसकी आपको 200 सोना मोहरें मिलेगी। रखना हो तो छोड़ जाओ, नहीं तो जंगलों में इसके साथ मंगल गाते रहो..." व्यापारी की कर्कश भाषा सुनकर डाकू नख-शिख सुलग गया, पर वह चुप रहा। डाकू ने हाथ आगे किया।

"लो 150 सोना मोहरें! उसके पहले की 50 सोना मोहरें आपको देनी बाकी है। और हाँ..." व्यापारी ने डाकू की आँखों में झाँका। उसमें कम रकम मिलने की आग जल रही थी। "ऐसा कोई माल और मिले तो लेकर आना, फारस देश में दासों की जरूरत बहुत बढ़ गई है।" व्यापारी ने डाकुओं द्वारा लाए गए व्यक्ति के सामने देखकर कहा। व्यापारी के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान थी।

गधों को भी शरम आ जाये, उतना बोझ इन गुलामों की पीठ पर लदा हुआ था। अच्छे अच्छों को दिन में तारे दिखा दे, और तारों को भी दिन दिखा दे, इतनी काली मजदूरी अपने दासों के पास कराने के लिए वह व्यापारी मशहूर था।

"क्या भैंसा की तरह काम कर रहे हो?" गुस्से में फारसी व्यापारी ने छड़ी पटकी। सभी दास काँप उठे।

"देखो अगर बराबर काम नहीं किया तो, आज ही जाने वाले इस जहाज के साथ तुम्हें भी फारस में भेज दूँगा, और फिर तो..." फारस की सुनी हुई क्रूरता की बातें सभी के दिमाग में आ गयी। चमड़ी उतर जाये उससे अच्छा तो पसीना बहाना था। सभी दासों को फारस जाने की बात का पता था, फिर भी विकल्प ना होने के कारण सभी ने अपना कार्य चालू रखा।

आप काम करो या न करो, फारस जाने का भय तो सभी दासों के सर पर लिखा ही गया था। क्योंकि वह फारसी व्यापारी का गुलामखाना था कि जो अपने अमानवीय अत्याचारों के लिए बहुत ही कुख्यात था।

"क्या टेढ़े की तरह मेरे सामने देख रहा है? काम पर लग..." तेजस्वी चेहरे वाले दास की ओर देख-कर फारसी सेठ दहाड़ा। लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ, उसके होंठ गुस्से से काँप रहे थे।

फारसी व्यापारी की माथे की नसें तंग हो गईं।

"तू टेढ़े के साथ बहरा भी लग रहा है..." चाबुक

जैसी जीभ के साथ-साथ हाथ की चाबुक भी चली। तेजस्वी दास की आँखों में और रोष छा गया। पर यह रोष पल दो पल में शांत हो गया। रोष दिखाने का फिलहाल यह स्थान नहीं था। जहर को जहर से ही मारना था।

दास ने अपने तेजस्वी चेहरे को झुका दिया फारसी व्यापारी के चेहरे पर अपने मूक विजय का आनंद छा गया।

उस आनंद के अहंकार में तेजवंत चेहरे वाले दास के चेहरे पर छलकते अटल निर्णय के तेज को देखना व्यापारी चूक गया। जहाज का होर्न बजा।

घटिका में गिरती रेत की तरह कालघटिका में समय की रेत गिरती जा रही थी। पूरी राजसभा में प्रहर घटिका के सिवा एक भी वस्तु की आवाज नहीं आ रही थी। लोग होने पर भी कोई भी नहीं था, ऐसी अनुभूति उस सभा के सभाजनों को हो रही थी।

आज 50वां दिन था, 50वां दिन! आज तक राजा को एक भी समाचार नहीं मिला था। उनके मुख पर इस बात का दर्द साफ दिखाई दे रहा था।

जाते-जाते अपने प्रिय मंत्री मित्र का राजा को किया हुआ वादा, राजा को याद आ गया। "मैं आपको हर रोज समाचार भेजता रहूँगा..."

राजा की आँखों से एक अश्रु उनके कपड़ों पर पड़ा। बालपन में घटी हुई एक एक घटनाएं राजा के मस्तिष्क में नदी के बहाव की तरह आ रही थी।

'क्या हुआ होगा? कहाँ गया होगा? कहीं मौत ने उसे अपना निवाला तो नहीं बना दिया होगा ना? ऐसे विचार वेताल की तरह राजा के मस्तक पर हावी होते गये।

"क्या हुआ होगा?" राजा जोर से चीखा। सभी सभाजनों की आँखें अपने दयनीय राजा पर गईं। उनकी आँखों में भी राजा के दुःखों को देखकर आँसू आ गये। पर राजा को आश्वस्त करने में वे नाकामयाब रहे।

बार-बार ऐसे चिल्ला-चिल्लाकर रोते हुए राजा की आवाज राजसभा में गूँजती रही। दो पल के बाद चीखें बंद हो गई। पर दूसरी भयावह आवाज सभी को सुनाई दी।

सभी सभाजन खड़े हो गये। राजा लाश की तरह अपने सिंहासन पर बेहोश हो गया।

(क्रमशः)

LEARNING
MAKES A MAN
PERFECT

VISIT US
www.faithbook.in
FaithbookOnline

- "Faithbook" नॉलेज बुक में साहित्यिक, धार्मिक एवं मानवीय सम्बन्धों को उजागर करने वाली कृतियों को स्थान दिया जाता है। ऐसी कृतियाँ आप भी भेज सकते हैं। चुनी हुई कृतियों को "Faithbook" नॉलेज बुक में स्थान दिया जाएगा।
- प्रकाशित लेख एवं विचारों से "Faithbook" के चयनकर्ता, प्रकाशक, निदेशक या सम्पादक सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है।
- इस Faithbook नॉलेज बुक में वीतराग प्रभु की आज्ञा विरुद्ध का प्रकाशन हुआ हो तो अंतःकरण से त्रिविध त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्।

SAYYAM GRAPHICS
80878 75828 | 92704 56160